डॉ० जिन्दर सिंह मुण्डा
विभागाध्यक्ष, हिन्दी
डीएसपीएमयू, राँची

# अनुवाद की समस्याएँ :-

आज का युग प्रधानतः वैज्ञानिक युग है, इसीलिए आज वैज्ञानिक क्षेत्र में निरंतर अध्ययन, अनुसंधान, चिंतन और लेखन हो रहा है। अनुवाद की प्रामाणिकता, भाषा की सटीकता पर प्रश्नचिह्न खड़े होने के बावजूद यह स्पष्ट है कि अनुवाद वर्तमान समाज के महत्वपूर्ण बन गया है। अनुवाद की समस्या द्विभाषिकीय है, इसके लिए उन दो भाषाओं का पूर्ण ज्ञान अपेक्षित है जिससे और जिसमें अनुवाद होता है। भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से अनुवाद की समस्या के दो पहलू हैं एक है द्विभाषिकीय रूपांतरण और दूसरा है भाव रूपांतरण। दोनों एक दूसरे के पूरक होकर आते हैं।

प्रत्येक भाषा में वाक्य की कुछ इकाइयां होती हैं जिनसे उनकी संरचना होती है। पदों से बनने वाले वाक्यांश वाक्य के घटक बनते हैं और एक वाक्य दूसरे वाक्य के साथ समन्वय प्राप्त करके एक वाक्य का रूप लेता है। कोई आदेश, निर्देश या उपदेश अपनी समग्र विषय-वस्तु के साथ एक महाकाव्य बन जाता है। अनुवादक को विषय-वस्तु पर ध्यान रखकर शब्द योजना, वाक्य रचना और समन्वय की व्यवस्था करनी होती है। जाहिर है यह प्रश्न जितना द्विभाषिकीय लगता है उससे कहीं अधिक भाव रूपांतरण का है। भाव रूपांतरण का सम्बन्ध सामाजिक द्विभाषिकी से है।

क्रमशः.....

Scanned with CamScanner

②

(1) रचनात्मक अनुवाद की समस्याएँ :- साहित्यिक अनुवाद के संदर्भ में साहित्य एक व्यापक अर्थवाचक शब्द है। समस्त ज्ञान के संचय को साहित्य की संज्ञा दी जा सकती है। अतः इस आधार पर साहित्य के अंतर्गत वस्तुओं के सामान्य परिचय से लेकर सूक्ष्म की समस्त उपलब्धियाँ आ जाती है। रचनात्मक साहित्य में ललित और अललित साहित्य का समावेश हो जाता है। इस प्रकार रचनात्मक साहित्य से अभिप्राय उस समस्त ललित साहित्य से होता है जिसमें महाकाव्य, खंडकाव्य, मुक्तक, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोर्ताज, आत्मकथा, जीवनी आदि आते हैं।

अनुवाद की समस्या.

स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा के पारस्परिक संबंध पर बहुत कुछ निर्भर करती है। इसका कारण यह है कि भाषा प्रदेश विशेष की संस्कृति का अभिन्न अंग होती है। उस प्रदेश के रहनेवालों के रहन-सहन, परिवेश, धर्म, आस्था-विश्वास, उनकी चिंतन पद्धति आदि से घनिष्ठ संबंध होता है। भूखण्ड की विशेषताएँ - भौगोलिक, प्राकृतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक आदि - वहाँ के साहित्य में प्रतिबिम्बित होती है और साथ ही वहाँ की भाषा को भी प्रभावित करती है। यदि स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा का सांस्कृतिक या अनुवांशिक संबंध है तो अनुवाद कार्य सरल होगा।

क्रमशः - - -

Scanned with CamScanner

③

<u>काव्यानुवाद की समस्याएँ</u>:- ज्ञान के साहित्य के अनुवाद की अपेक्षा सर्जनात्मक/रचनात्मक अनुवाद अधिक जटिल तथा कठिन होता है। ज्ञान के साहित्य के आधार-तत्व-तथ्य और विचार जहाँ मूर्त तथा निश्चित होते हैं, वहाँ रचनात्मक साहित्य के विधायक तत्व - भाव और कल्पना सर्वथा सूक्ष्म-तरल होते हैं।

- तथ्य और विचार का तो संप्रेषण हो सकता है और होता है; किंतु भाव और कल्पना का उद्बोध ही किया जा सकता है संप्रेषण नहीं। वास्तव में उद्बोधन ही उनका संप्रेषण है क्योंकि कवि सहृदय के चित्त में अपनी अनुभूति का स्थानांतरण नहीं वरन उसकी समानांतर अनुभूति को ही उद्बुद्ध करता है।
- रचनात्मक साहित्य के अनुवाद की प्रक्रिया निश्चय ही अधिक जटिल होती है। इसी तर्क से साहित्य-कला के तत्वदर्शी मर्मज्ञों का विचार है कि ललित साहित्य का अनुवाद मिथ्या कल्पना है। अनुवाद के रूप में सामान्यतः जिसे ग्रहण किया जाता है वह अनुवाद न होकर दूसरी रचना ही होती है।
- मूल कविता के शब्द की जगह लक्ष्य भाषा का शब्द रखने मात्र से तो अनुवादक काव्यानुवादक धर्म नहीं निभा सकता। इसलिए मूल कविता में प्रयुक्त हर शब्द की गहराई तक अनुवादक को पैठना होगा तभी वह स्रोत भाषा की कविता के भाव रूपी अर्थ ग्रहण करके लक्ष्य भाषा के शब्दों में अभिव्यक्ति कर सकता है।

क्रमशः...

④

काव्यानुवाद की मुख्य समस्याएँ निम्नलिखित हैं :—

(i) स्रोत भाषा संबंधित समस्याएँ

(ii) अलंकार संबंधित समस्याएँ

(iii) छंद संबंधित जटिलताएँ

(iv) काव्यानुवादक का व्यक्तित्व का अनायास समाविष्ट हो जाना

(v) काव्य की अर्थरचना और अभिव्यंजना विषयक जटिलता

(vi) विशिष्ट कविता का अनुवाद विशिष्ट व्यक्तिनिष्ठ तथा विशिष्ट मनोदशानिष्ठ होता है।

(vii) मूल भाषा की अर्थरचना, अभिव्यक्ति और प्रभावविषयक समस्या

(viii) परिवेशगत समस्या

(ix) काव्य में बिम्बविधान और चित्रात्मकता की समस्या।

Scanned with CamScanner

(5)

कथानुवाद की समस्याएँ:-

कथा-साहित्य के अंतर्गत उपन्यास तथा कहानी विधा को रखा जाता है। मात्रा की दृष्टि से कथा साहित्य दूसरी भाषाओं से सर्वाधिक अनुदित होता है और बड़ी रुचि से जनता तथा विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा पढ़ा जाता है। साहित्य की किसी भी विधा का अनुवाद अपने आप में चुनौती है।

हिन्दी में अनुवाद करने वाले प्रायः दो प्रकार की रचनाओं का अनुवाद करना होता है:-

(i) भारतीय भाषाओं में लिखे गए कथा-साहित्यों का अनुवाद

(ii) विदेशी भाषाओं में लिखे गए कथा-साहित्यों का अनुवाद (विशेषतः अंग्रेजी और रूसी भाषा में लिखी गयी)

विदेशी भाषाओं में लिखी गई कृतियों में नाम तो अपरिचित होते ही हैं किन्तु समस्या, परिवेश, संवेदना भी भारतीयों से अलग होती है जिनके पुनः सृजन करने में अनुवादक को अधिक कठिनाई होती है। भारतीय भाषाओं में रची गई कृतियों भारतीय भाषाओं के विविधता में भी एकता पायी जायेगी जिनमें अनुवादक को इतनी कठिनाई महसूस नहीं होगी।

कथा-साहित्य की अनुवाद में बोलियों के शब्द, विशिष्ट लहजा, आँचलिक रूप आदि अनेकानेक समस्याओं से एक अनुवादक गुजरता है। कथा-साहित्य की भाषा जनभाषा के निकट होती है, अतः भाषा शैली के जीवंत मुहावरों, शैली आदि की सही पकड़ अनुवादक को होनी चाहिए। क्रमशः---

Scanned with CamScanner

कथानुवादक की प्रमुख समस्याएँ :-

(i) भाषा समस्या — स्रोत भाषा — लक्ष्य भाषा

(ii) मूल भाषा की छवि समस्या

(iii) विषय ज्ञान की समस्या

(iv) व्याकरणिक सूक्ष्म ज्ञान की समस्या

(v) देशकाल एवं वातावरण की समस्या

(vi) शब्द चयन की समस्या

(vii) वाक्य सौंदर्य / वाक्य तत्व की समस्या

(viii) शिल्प एवं शैली की समस्या

(ix) रचना-विधान की समस्या (लिंग, वचन, कारक, संज्ञा, समास)

(x) मुहावरे, लोकोक्तियाँ, कहावतें एवं अन्य भावात्मक समस्या

(xi) 'न तोड़ो न जोड़ो' की नीति, एवं व्यक्तित्व की समस्या

क्रमशः ...